आज की बापदादा की अव्यक्त मुरली सहज सार Date: 15-06-2014

बाबदादा ने आज की मुरली में निरन्तर सेवाधारी किसको कहा जाता है, वह स्पष्ट किया हैं.

आज बापदादा बच्चों की महिमा के गीत गा रहे थे. बापदादा ने हर बच्चे में बाप को प्रत्यक्ष करने का उमंग देखा. सिवाय बच्चों के बाप प्रत्यक्ष हो भी नहीं सकता. तो बाप (भगवान) को प्रत्यक्ष करने वाले कितने श्रेष्ठ ठहरे? इतना नशा या सेवा की स्मृति सदा रहे. जैसे बाप अविनाशी है, आत्मा अविनाशी है, सर्व प्राप्ति संगमयुग की अविनाशी है, ऐसे ही स्मृति या नशा भी अविनाशी रहे? - यानी बच्चों में बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा का नशा सदा अविनाशी रहना चाहिए. तब निरन्तर सेवाधारी बनेंगे.

आज तो बापदादा मिलने आये हैं, सुनाया तो बहुत है लेकिन आज सुनाये हुए का स्वरूप देखने आये हैं, स्वरूप में क्या देख रहे हैं? दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कोन्फेर्न्स में बच्चों ने सर्विस बहुत अच्छी की है, अनेक अज्ञानी आत्माओं को स्मृति अर्थात जाग्रतता दिलाई. बापदादा ने देखा की बच्चों की सेवा से देहली वासी हलचल में जरूर आये हैं. बापदादा ने आगे कहा, जैसे घरनी में पहले हल चलाते है ना और हल चलाते हुए बिज डाला जाता है ऐसे अपने भविष्य राजधानी में या अपनी आदि धरनी में हलचल रूपी हल चला....लोगों ने फील किया, कोई ताक़त है, कोई शक्ति है, साधारण शक्तियॉ नहीं हैं. तो बच्चों ने हलचल के साथ लोगों में ये बिज भी डाला हैं. गवर्मेन्ट के कानों तक भी आवाज पहुंची हैं.

आगे के लिए बापदादा ने कहा, अभी इस बीज को वाणी द्वारा या याद की शक्ति द्वारा फलीभूत करना हैं. बच्चों ने अभी तो गुप्त वेश में अपना फाउन्डेशन स्टोन डाला है अर्थात बिज डाला हैं. लेकिन समय प्रमाण यही बीज फल के रूप में आप देखेंगे. यही दुनिया के लोग आपका आह्वान करेंगे, आजयान करेंगे.

बापदादा ने आगे के लिए निरन्तर योगी की स्थिति के बारे में समझाते हुए कहा सोते हुए भी सेवा हो. सोते हुए भी कोई देखे तो आपके चेहरे से शांति, आनंद के वायब्रेशन अनुभव करें, इसलिए कहा जाता है कि बडी मीठी नींद थी. हर संकल्प में हर कर्म में सदा सर्विस समाई हुई हो, इसको कहा जाता है निरन्तर सेवाधारी.

बाप और सेवा. जैसे बाप अति प्यारा लगता हैं. बाप के बिना जीवन नहीं, ऐसे ही सेवा के बिना जीवन नहीं. ऐसे निरन्तर योगी और निरन्तर सेवाधारी विघ्न-विनाशक होते हैं. बाप की याद और सेवा ये डबल लोक लग जाता हैं. इसलिए माया आ नहीं सकती.

सदा यह याद रखो कि हर कर्मेन्द्रियॉ द्वारा बाप के याद की स्मृति दिलाने की सेवा करनी हैं.

हर संकल्प द्वारा विश्व कल्याणकारी बन लाइट हाउस का कर्तव्य करना हैं.

हर सेकेण्ड की पावरफुल वृति द्वारा चारों और पावरफुल वायब्रेशन फैलाने हैं अर्थात वायुमण्डल परिवर्तित करना हैं.

हर कर्म द्वारा आत्माओं को कर्मयोगी भव का वरदान देना हैं.

हर कदम में स्वयं प्रति पदमों की कमाई जमा करनी हैं.

तो संकल्प, समय, वृति और कर्म चारों को सेवा प्रति लगाओ, इसको कहा जाता है निरन्तर सेवाधारी अर्थात सर्विसेबुल.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email - a.brahmin.soul@gmail.com